आपातकाल में सृजन फुलवारी

मान बहादुर सिंह 'मान'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मान बहादुर सिंह 'मान'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-158-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, मान बहादुर सिंह 'मान'

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MAAN BAHADUR SINGH 'MAAN'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तकें	6
2.	आशा ही जीवन है	7
3.	पृथ्वी दिवस	8
4.	फर्ज़	9
5.	कोरोना	10
6.	खुद से हिन्दुस्तान	11
7.	जीने का तरीका	12
8.	एज अपील	13
9.	हमदर्द	14
10.	मेहनत	15
11.	ज़िन्दगी ज्यों किताब	16
12.	शहरों में पसरा सन्नाटा	17
13.	अनेकता में एकता	18
14.	नारी तू नारायणी	19
15.	जाना किसने?	20
16.	मनके मन के	21

पुस्तकें

पुस्तकों में समाया ब्रह्माण्ड,
पूर्वजों का सारा ज्ञान है!
समाया भारतीय संस्कृति दर्शन,
हमारा अतीत भविष्य वर्तमान है!

समायी जिसमें समूची सृष्टि, प्रकृति,
पुस्तकें हमारे पूर्वजों की वसीयत प्रान हैं!
करें संचित इन्हें हमारी धरोहर, प्रशस्ति,
पुस्तकें पुरखों की पूँजी कीर्तिमान हैं!

हमारे वेद पुराण गीता रामायण,
हमारा ख़ज़ाना, हमारी पहचान हैं!
पुस्तकें हैं सूर्य का दिव्य अनंत प्रकाश,
चंद्रमा की शीतलता माँ आँचल समान हैं!

पुस्तकें करती हमारे दुःखों का अंत,
सदा होती हमारे संकटों का हल है!
जगत में सबसे बड़ी मित्र होती पुस्तकें,
हमें दिखातीं राह सदा पाक निर्मल है!

आओ हम करें पुस्तकों से सुखमय बातें,
इनके साथ बिताए दिन व रातें!
पहनाए इन्हें संचय का अमलीजामा,
पुस्तकें हमारी जीवन निधि राम व श्यामा!

आशा ही जीवन है!

गर शत्रु पर है विजय पाना,आशा का सूरज बाँध लो
है मुश्किलों के पार जाना, मन को पहले साध लो
ले लक्ष्य पथ आगे बढ़ो, हौसलों के साथ तुम,
है किसमें साहस जो भिड़े, गिरि शिख़र को फाँद लो।

गर लक्ष्य भेदन चाह मन, आशा कभी मत छोड़ना
भय निराशा त्यागकर, उम्मीद से मन जोड़ना
तूफ़ान हो कितना भयंकर, आशा न डगमग हो कभी,
जीत लोगे फ़िर समर तुम, धीरज कभी मत छोड़ना।

सृष्टि का कण-कण पुकारे, आशा ही जीवन है धरा
आशा न हो जिस प्राणि में, वह प्राणि समझो है मरा
आशा ही जीवन दृष्टि है, मूल है यह सृष्टि का,
आशा ही जीवन श्वास है, विश्वास है यह प्रभु भरा।

पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस नहीं,
एक शुभ संदेश है।
मिल बैठ करें विचार,
प्रदूषित परिवेश है।

धरा पर पेड़ लगाने का,
दिन एक संकल्प है।
धरती के उज़ड़े स्वरूप को,
सजाने का लेना व्रत है।

वाहन कारखानों का धुँआ,
है परिवेश में छाया हुआ।
घटती जा रही ऑक्सीजन,
कार्बन बड़ा खतरा जीवन।

पृथ्वी दिवस एक होश है,
जगाने आदमी जो मदहोश है।
धरती को स्वच्छ बनाने का,
अभियान प्रदूषण मुक्त बनाने का।

उचित हो संसाधन उपयोग,
स्वच्क्ष धरा से मंगल योग।
प्रदूषण जड़ सारी आपदा,
पृथ्वी दिवस हो रोज़ सदा।

फर्ज़

हे! प्रभु तूने ये कैसा वायरस कोरोना जाया है
बनाई कैसी ये घड़ी इंसां-इंसां के पास न आया है

माँ के होते हुए भी उसके बच्चे अनाथ से हो गए,
माँ की ममता के प्यासे मगर दूर आँचल की छाया है!

भगवन ये कैसी बंदिशें बेड़िया पाँव तूने डाली है,
रिश्तों की परवाह नहीं मन मस्त सेवा माली है,

हो रिश्ते व फर्ज़ में से चुनना जब किसी एक को,
फर्ज़ सेवा का बड़ा ये सबब सीख तूने दे डाली है!

कोरोना

आज जगत में एक ही, संकट चारों ओर।
उपाय एक न सूझता, कोरोना का ज़ोर।।
कोरोना का जोर, जान मानव खतरे में।
महाशक्ति नतमस्त, भारत संस्कृति घेरे में।।
कहे 'मान' कविराय, सहमी दुनिया आवाज़।
कोरोना के खौफ़, है जग जीता डर आज।1।

सदमें उन्नत विज्ञान है, हाथ मले असहाय।
कोरोना को मारने, औषधि नहीं उपाय।
औषधि नहीं उपाय, सावधानी सब बरतो।
शीत पेय माँस तज, भीड़ यात्रा से बच तो।।
कहे 'मान' कविराय, रहो सब हरदम हद में।
बचने करो प्रचार, उबर अभियान तू सदमें।2।

खुद से हिन्दुस्तान

जान है तो ज़हान है प्यारे!
हम अपने घर शान हैं प्यारे!
साथी,तू भी अपने घर पे रह,
समझ,हम अंजान हैं प्यारे!!

कोरोना फटाफट फैलता!
संपर्क की जो चैन पाता!
गर संपर्क से हम बच सके,
फिर है सुरक्षित जान प्यारे!!

होकर निकलती मस्त आली!
जब घर से दीमक पंख वाली!
घर में कहाँ फिर लौट पाती,
छोड़ परिजन दे प्रान प्यारे!!

न औषधि कोई कोरोना लड़े!
है प्रबल शत्रु हम निर्बल पड़े!
घर में रहो हल ढाल इसका,
खुद की हथेली है जान प्यारे!!

आओ,करें संकल्प मन सब!
घर में रहेंगे परिजनों संग!
हम जीत लेंगे जंग यह भी,
है खुद से हिन्दुस्तान प्यारे!!

जीने का तरीका

भगवान मुझे जीने का एक तरीका दे दो।
सबको दे सकूँ दिल में जगह सलीका दे दो।।

हर सकूँ सबके अँधेरे ऐसी एक रोशनी दे दो।
चिपका रहूँ सबसे सदा ही ऐसी चाशनी दे दो।

सबकी खुशी में खुश रहूँ ऐसी हसरत दे दो।
सबके लिए दिल में दर्द आँखों में चाहत दे दो।।

हर प्राणी जीव में तुझे देखूँ ऐसी नजर दे दो।
सबका चहेता बन जी सकूँ ऐसी उमर दे दो।।

बना रहूँ अकिंचन पर कर्म उजाला दे दो।
भूखे को दे सकूँ भोजन एक निवाला दे दो।।

रूठे को मना रोते को हँसा पाऊँ शक्ति दे दो।
बूढे माँ -बाप के साथ रह पाऊँ भक्ति दे दो।।

अंधे की लाठी बन जाऊँ ऐसा भाव दे दो।
सबका प्रेम पात्र बन जाऊँ स्वभाव दे दो।।

तेरी सृष्टि में समरस रहूँ निज दृष्टि दे दो।
प्रभु तेरे चरणो,नजरों में सजा रहूँ वृष्टि दे दो।।

एक अपील

बेटों के हाथ में तलवार नहीं,कलम दें!
जीवन पथ पर विनाश नहीं,इलम दें!

बच्चों को सुनहरी सुखद संगत दें!
उन्हें उत्तम स्नेहिल आचरण रंगत दें!

बेटे,बेटी को मुहब्बत का संसार दें!
औलाद को दौलत नहीं संस्कार दें!

बच्चों को जीवन जीने की कला दें!
देश,समाज को एक इंसान भला दें!

बच्चों को सच्चरित्र ज्ञान प्रकाश पुंज दें!
सुवासित जीवन बगिया निकुंज दें!

भाई,देश में नफरत का नहीं विस्तार दें!
दिलों में बहने बस प्यार ही प्यार दें!!

हमदर्द

माँ, तू मेरा बज़ूद रंगत जहान श्वास है!
ये दुनिया ये महफ़िल तेरे बिन नहीं रास है!

माँ,तू साकार ममता की दरिया स्त्रोत है!
तेरे ही प्रकाश से ये जीवन ओत-प्रोत है!

माँ,तेरे आँचल समक्ष आकाश भी न टिका है!
आकाश बदलता रंग तेरा आँचल न बिका है!

माँ,तुझमें समायी सृष्टि सारी कायनात है!
व्याप्त तेरा ही बज़ूद सृष्टि कण-पात है!

माँ,तेरा स्वभाव वृक्ष व सरिता सा है!
दूसरों के लिए बनी सरस कविता सा है!

माँ,सुत पर न्यौछाबर तेरा प्यार,त्याग,सुख!
किन्तु तेरा कृतघ्न बेटा देता अपमान दुःख!

माँ,भूल जाता है तेरा बेटा तेरा प्रेम प्रसव दर्द!
फ़िर भी बेटे के लिए तेरा प्रेम न हुआ ज़रा सर्द!

जगत में तू धन्य है जग जननी माँ,विधाता!
तुझसे बड़ा दुनिया में न कोई हुआ हमदर्द!

मेहनत

क्या नहीं मिलता जगत मेहनत के बल पर?
देखो जहाँ आबाद ये मेहनत के बल पर!
खिले मरुभूमि में भी पुष्प मेहनत के बल पर,
है चरण सफलता चूमती मेहनत के बल पर।

मेहनत से ही बनती हैं हाथ की लकीरें।
मेहनत से ही खुल सके भाग्य की किवांरे।
मेहनत से ही हम छू सके चाँद सितारे।
मेहनत में ही है छिपी खुशी की जागीरें।

मेहनत करने में अगर हमें आए न लज्जा,
ब्रम्हास्त्र है स्वास्थ्य का जीवन भरा मज्जा।
वरदान है भगवान का श्रृंगार का खज्जा,
वरदान है भगवान का सुख शान्ति का छज्जा!

ज़िन्दगी ज्यों किताब

ज़िन्दगी ज्यों किताब होती है!

होती कितनी ख़ूबसूरत किताब़,
जब ले प्रेस से जन्म,शक्ल पाती है।

इस धरा पर गीता,कुरान, बाईबिल बन,
इठलाती,हँसती,मुस्कुराती है।

समय के साए में बँध फ़िर,
सांसारिक लोभ,मोह बन जाती है।

शनैः वासनाओं की धूल होती जमा,
किताब़ गंदी पीली पड़ जाती है।

हो जाते कमज़ोर पन्ने मूल्यहीन,
रद्दी की टोकरी में ज़गह रह जाती है।

रद्दी की टोकरी से वह अंततः,
मिट्टी में मिल मिट्टी बन जाती है।

ज़िन्दगी ज्यों किताब होती है!!

शहरों में पसरा सन्नाटा

कोरोना बना राह का काँटा,
शहरों में पसरा सन्नाटा।
सूनी गलियाँ,सड़कें सूनी,
बंद हुआ सब सैर सपाटा।

बंद हुए सब गाँव शहर,
मानव जीवन गया ठहर।
घर के भीतर भी बेचैनी,
बाहर सेवा में हमसफ़र।

बंद हुए घर के कपाट,
सब बंद दुकानें घाटा।
बाहर फँसे हुए परिजन,
है घर में दाल न आटा।

किसी घर दूध फल नहीं,
नहीं किसी आलू भाटा।
हालत खस्ता हुई देश की,
बस,रेल बंद सब लाटा।

मानव का मिलना दूभर,
कोरोना का भय चांटा।
मन धीरज विश्वास मगर,
निकलेगा सूरज भ्राता।

जब भी आया देश पर संकट,
संकल्प हौसला हमने जीता।
घर में रह सब करो साधना,
नित पढ़ो पाठ रामायण,गीता।।

अनेकता में एकता

मुझे गर्व है मैं भारत का रहवासी हूँ!
धर्म अनेक भाषा-भाषी संग आवासी हूँ!
विविध पुष्प पर एक गंध का सुखरासी हूँ!
एक-एक मिल ग्यारह होने का आभासी हूँ!

सर्वे भवन्तु सुखिनः वाला देश हमारा है!
सत्यम् शिवम् सुंदरम् वाला वेश हमारा है!
सत्यमेव जयते वाला परिवेश हमारा है!
साथ जियेंगे साथ मरेंगें उद्घोष हमारा है!

नहीं धरा पर कोई संस्कृति अपने जैसी है!
नहीं धरा पर भाईचारा सम अपना वैसी है!
नहीं धरा वसुधैव कुटुम्बकम् भाव हितैषी है!
जियो और जीने दो वाली सूक्ति न ऐसी है!

है बहुरंगी इंद्रधनुष यह पर गगन एक है!
है विविध पुष्प युक्त उपवन चमन एक है!
है रीति गीत परिपाटी भिन्न पर माटी एक है!
है विविध मनोहर रंग मंच पर झाँकी एक है!

पूजा नमाज़ हैं भिन्न मगर विश्वास एक है!
उन्मुक्त गगन में उड़ते पक्षी आकाश एक है!
अनेकता में एकता ही धरा हिन्द पहचान है!
अनेकता में एकता माँ गौरव अभिमान है!!

नारी तू नारायणी

प्रेम की होती पुजारन वह,
अपना तन मन सब लुटाती है।
हो जाती अनुरक्त जिस पर भी,
सर्वस्व न्यौछाबर हो जाती है।

नारी होती मन की अति कोमल,
विश्वास में धोखा खा जाती है!
नहीं जानती छलना स्वयं वह,
सदा वह ही छली जाती है!

अपने आहत मन भावनाओं में,
समेटे वह दुनिया का हर रंग है!
एक नारी ही अभागन इस जहाँ में,
जिसका असहज अप्रकट हर उमंग है!

अंतर्हृदय से टूटी सदा रोती जो,
बाहर से वह लगती मुस्कुराती है!
जग सारा अनभिज्ञ नारी की व्यथा से,
अश्रु सरिता में कभी उफान न लाती है!

नारी तू नारायणी तू कल्याणी,
तू ही सृष्टि,प्रकृति आधार है!
जग समझे न समझे तेरे माँ रूप को,
माँ तेरी कृपा से टिका ये संसार है!!

जाना किसने?

दिल की बात ही तो थी, मिल बैठ कर लेते,
दो दिलों के बीच में,नफ़रत भरा है किसने?

घर की बात ही तो थी,घर में सुलझ लेते,
छोड़ा तात विभीषण,अहम् छोड़ा किसने?

'मान'भाई की बात,बचा खुद लंका लेते,
अपने गुरूर में मस्त,रिश्ता जोड़ा किसने?

संबंधों के तार बड़े ही नाजुक रिश्ते,
क्यों टूटा संबंध तार,यह जाना किसने?

मरता प्रेम कलुष मन,नफ़रत दिल पनपे,
छिन रहा सुखचैन,प्रेम पहचाना किसने?

मन में बढ़ता स्वार्थ,बस अपना-अपना,
लालच होता पाप मूल,मन त्यागा किसने?

मनके मन के

मन की पीड़ा व्यथा को,मन ही समझत भाय।
बोझ बाँट साझा करे,मन को मन सहलाय।1।

कभी न पथ भटकात मन,मन से मन को जोड़।
मन से बड़ा न गुरु सखे, नहीं जगत मन तोड़।2।

तुझे प्रीति करना अगर, कर मन से मन प्रीति।
मन से मन की प्रीति जब, कर प्रभु की परतीति।3।

सुख दुःख में मन साथ है,कभी न छोड़े साथ।
जननी सम उपकार मन,धीरज़ देता तात।4।

कभी ज़रूरत राय की,जाओ मन के पास।
हर उलझन का हल भखे,मन ना करे निराश।5।

विद्रोह जब भी मन करे,कर मन से मुलकात।
मन को मन ही बस करे,मन समझे मन बात।6।

"मान" रखो मन का सदा,अपना मित्र बनाय।
लेना कुछ निर्णय अगर,मन से पूँछ लो भाय।7।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

हिंदी साहित्य के विकास व उत्थान के लिए गठित अंतरा शब्दशक्ति का योगदान साहित्य जगत में अद्वितीय है। अंतरा शब्दशक्ति हिंदी भाषा के विकास के लिए संकल्पित नवांकुर रचनाकारों का एक मंच है। जहां मंच की संस्थापिका श्रीमती डॉ. प्रीति समकित सुराना जी के सानिध्य में सभी रचनाकार अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार सार्थक साहित्य सृजन के काम में लगे हुए हैं।

आज जब कोरोना महामारी के संकट से संपूर्ण विश्व जूझ रहा है और ऐसे में भारत भी अछूता नहीं है पूरे देश में लॉकडाउन घोषित है और आपातकाल जैसी स्थिति निर्मित हो गई है। ऐसे संकट के समय में अंतरा अंतरा शब्दशक्ति का नवप्रयास स्तुत्य है। ऐसे संकट के समय में अंतरा शब्दशक्ति संस्थान से जुड़े हुए हजारों रचनाकारों को साहित्य सर्जन कर समय सदुपयोग के लिए आह्वान किया। आपातकाल की परिस्थितियों में जन कर्तव्य और अनुभव विचारों को मंच के माध्यम से समस्त पाठकों तक पहुंचाने और देशवासियों को जागृत करने का बीड़ा उठाने की प्रेरणा दी। सृजन निश्चय ही आपातकाल में निराशा से दूर ले जाता है। मुझे संकट काल की इन परिस्थितियों सृजन से अटूट संबल मिला है। अंतरा शब्दशक्ति अपने नित नव प्रयोगों से हमारे हौसले को बनाए रखा, सतत् सृजन के लिए प्रेरित करती रही।

सृजन में लगे रहने पर आपातकाल का पता ही नहीं चला। इस सृजन का सम्पूर्ण श्रेय अंतरा शब्दशक्ति की संस्थापिका के नव प्रयास को जाता है। जिनकी प्रेरणा स्तुत्य है। मैं हृदयतल से सुराना दी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें नमन् करते हुए अंतरा शब्दशक्ति के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

रचनाकार

मान बहादुर सिंह 'मान'

ग्राम-पो-डभौरा, जिला-रीवा (म.प्र.)
पिन-४८६५५

Email- manbahadursingh190@gmail.com
Mobile - 9752666980

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-158-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/